NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A. Psychology, Part-I**

Paper : **Paper-IV**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : **समाज मनोविज्ञान : एक व्यावहारपरक विज्ञान के रूप में**
(Social Psychology : An Applied Science)

समाज मनोविज्ञान : एक व्यावहारपरक विज्ञान के रूप में
Social Psychology : An Applied Science

12.1 परिचय (Introduction)

समाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक काफी उपयोगी शाखा है। इसके अध्ययन की कई उपयोगिताएं हैं। समाज मनोविज्ञान के तत्वों की सहायता से हमें तरह-तरह की सामाजिक समस्याओं को समझने में तथा उनका समाधान ढूंढ़ने में काफी मदद मिलती है। समाज मनोविज्ञान अपने विभिन्न सिद्धान्तों, आंकड़ों एवं वैज्ञानिकों अध्ययनों के आधार पर निश्चित रूप से कुछ इस प्रकार के तथ्य लोगों के सामने रखता है, जिनसे व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समुदाय के बीच, समुदाय एवं समुदाय के बीच तथा राष्ट्र एवं राष्ट्र के बीच उत्पन्न कटुता, द्वेष, घृणा आदि कम हो सके और इसकी जगह पर भाईचारा एवं सहनशीलता का सम्बन्ध उत्पन्न हो सके। समाज मनोविज्ञान के अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी संस्कृति होती है, जिसमें पलने वाले सभी व्यक्तियों के व्यवहार दूसरी संस्कृति के व्यक्तियों के प्रति एकसमान नहीं होता है। इन विभिन्नताओं के बावजूद भी दूसरे व्यक्तियों या समुदायों के प्रति एक स्वस्थ मनोवृति (Healthy attitude) विकसित की जा सकती है। सामाजिक जीवन में पूर्वाग्रह रूढ़ियुक्तियां काफी व्याप्त हैं। समाज मनोविज्ञानी विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन करके सामाजिक जीवन में व्याप्त इस नीरसता को दूर करने में काफी सहायत सिद्व हुए हैं। इसके द्वारा सामाजिक अभियोजन में काफी मदद मिलती है। सामाजिक जीवन को सजग, सरस एवं सफल बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति का अभियोजन इन सामाजिक परिवर्तनों के साथ हो सके। समाज मनोविज्ञान सामाजिक मूल्यों (Social values), सामाजिक मानकों (Social Norms), सामाजिक शक्ति (Social Power) इत्यादि के विषय में व्यक्ति को यथोचित ज्ञान प्रदान करके उन्हें स्वस्थ सामाजिक अभियोजन करने में सहायता प्रदान करता है। समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति की अन्तः क्रियाओं का अध्ययन करके कुछ इस प्रकार का नियम तथा सिद्वान्त तैयार करता है कि जिससे एक स्वस्थ सामाजिक क्रम (Social Order) बना रहे। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक क्रम (Social Norm) तथा सामाजिक व्यवस्था (Social System) कायम रहती है। सामाजिक मानकों एवं मूल्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करके समाज मनोविज्ञानी या मनोवैज्ञानिक यह बतलाने की कोशिश करते हैं कि अमुक व्यक्ति का व्यवहार समाज-विरोधी क्यों है? इसके सामाजिक एवं

मनोवैज्ञानिक कारण कौन-कौन है? इनका उपचार किस ढंग से किया जाता है, इत्यादि। व्यक्तित्व के स्वरूप विकास के लिए महत्वपूर्ण एवं सहायक सामाजिक परिस्थितियों का निर्धारण समाज मनोवैज्ञानिक करते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक उपयोगिताओं के आधार पर समाज मनोविज्ञान आज एक लोकप्रिय शाखा के रूप में उभरकर हमारे समक्ष आ सका है। इसका स्वरूप काफी जटिल है। इसके स्वरूप पर विचार करने से यह पता चलता है कि यह एक शुद्ध मनोविज्ञान या मौलिक विज्ञान (Basic Science) है। इसके द्वारा शुद्ध मनोविज्ञान अथवा मौलिक विज्ञान की सभी शर्तों एवं अभिधारणाओं को पूरा किया जाता है। समाज मनोविज्ञान सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं (Social Interaction) का विज्ञान है। पारस्परिक क्रिया (Interaction) के समय व्यक्तियों के व्यवहारों का स्वरूप क्या होगा? इसकी जानकारी के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि व्यक्ति के व्यवहारों का स्वरूप क्या होगा? इसकी जानकारी के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उस व्यवहार को उत्पन्न करने में किन-किन कारकों अथवा निर्धारकों को भूमिका होती है? इसकी जानकारी के उपरांत पारस्परिक क्रिया में भाग लेनेवाले व्यक्ति के व्यवहारों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करना सम्भव हो सकता है। इस प्रकार समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में निम्नलिखित विषय महत्वपूर्ण है-

(क) समाज मनोविज्ञान : एक शुद्ध मनोविज्ञान (Social Psychology : A Pure Psychology),

(ख) समाज मनोविज्ञान : एक व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में (Social Psychology : An applied Science)

(ग) व्यवहार के विश्लेषण के प्रकार (Types of Analysis of Behaviours),

(घ) पारस्परिक क्रिया की विशेषताएं (Characteristics of Interaction)

12.2 समाज मनोविज्ञान : एक व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में (Social Psychology : An Applied)

समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह एक ओर शुद्ध मनोविज्ञान है और दूसरी ओर व्यवहारिक मनोविज्ञान है। समाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक प्रमुख प्रयुक्त शाखा (Applied Branch) है। एक प्रयुक्त विज्ञान (Applied Science) के रूप में समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध वास्तविक परिस्थिति में किए जाने वाले ऐसे

सामाजिक-मनोवैज्ञानिक शोध (Social-Psychological Research) तथा अभ्यासों से होता है, जिसका उद्वेश्य मानव सामाजिक व्यवहारों को समझना तथा सामाजिक समस्याओं के लिए समुचित समाधान प्रदान करना होता है। प्रयुक्त विज्ञान उसे कहते हैं, जिसमें व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। इस प्रकार के मनोविज्ञान में सिद्वान्तों तथा नियमों के आलोक में मानव-जीवन की विभिन्न व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करके मानव जीवन को सुखद बनाने का प्रयास किया जाता है। जैसे शिक्षा से सम्बन्धित भिन्न-भिन्न व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। बालकों की शिक्षा को कैसे सफल बनाया जा सकता है? बच्चे शिक्षा में क्यों पिछड़ जाते हैं? वे पढ़ाई क्यों छोड़ देते हैं? प्रतिभाशाली, मानसिक दुर्बल तथा सामान्य बालकों के लिए शिक्षा कार्यक्रम कैसा होना चाहिए इत्यादि व्यावहारिक समस्याओं का समाधान शिक्षा मनोविज्ञान करता है। इसी प्रकार औद्योगिक मनोविज्ञान एक प्रयुक्त विज्ञान (Applied Science) है, जो उद्योग से सम्बन्धित व्यावहारिक समस्याओं का समाधान ढूंढ़ता है। एक प्रयुक्त समाज मनोवैज्ञानिक (Applied Social Psychologist) जिन प्रमुख सामाजिक समस्याओं (Social Problems) का अध्ययन कर उनके समुचित समाधान का प्रयत्न करते हैं, उनेमें गरीबी (Poverty), बढ़ती जनसंख्या की समस्या (Problem of rising populations), अन्तर समूह संघर्ष (Intergroup conflict), अपराध, समाज में अर्थ (wealth) के असमान वितरण से उत्पन्न समस्या, पूर्वाग्रह तथा विभेद (prejudice and distribution), सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce), आक्रामकता (Aggression), वेश्यावृति (Prestitution) आदि प्रधान हैं।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रयुक्त विज्ञान के द्वारा सामाजिक वातावरण में मनुष्य की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति को कई सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति जिस समाज का सदस्य होता है। जैसे- हमारे समाज में दहेज (Dowry), जातिभेद (Casteism), व्यक्तिगत दंगे (Caste-riots), साम्प्रदायिक दंगे (Communal riots), भिखमंगी आदि अनेक सामाजिक समस्याऐं हैं जिनके समाधान का प्रयास प्रयुक्त मनोविज्ञान के सिद्वान्तों तथा नियमों के आलोक में किया जाता है।

इस सन्दर्भ में मर्टन तथा निस्वेट (Merten and Nisbet, 1961) ने कहा है कि समाज मनोविज्ञान का एक दायित्व व्यावहारिक समस्याओं का समाधान में प्रयुक्त विज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। व्यावहारिक समस्याओं से तात्पर्य उन समस्याओं से है, जिनका प्रभाव प्रतयक्ष या अप्रतयक्ष रूप से समाज के सभी या अधिकांश व्यक्तियों पर पड़ता है। ऐसी समस्याओं के समाधान से समाज तथा व्यक्ति दोनों को लाभ पहुंचता है तथा दोनो की प्रगति में

मदद मिलती है। यदि इन सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं हो तो दोनों को हानि पहुंचती है तथा उनकी प्रगति में बाधा पहुंचती है। जैसे- साम्प्रदायिक तनाव या सामुदायिक ढंग विशेष रूप से भारतीय परिवेश में एक गम्भीर सामाजिक या व्यावहारिक समस्या है, जिसका समाधान व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र सभी के हितों के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार जातिगत दंगा (Caste riots), दहेज प्रथा, छुआछुत, बाल-विवाह आदि भारतीय समाज की व्यावहारिक समस्याएं हैं, जिनका समाधान व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के लिए आवश्यक है। अतः समाज मनोवैज्ञानिक इन सभी व्यावहारिक समस्याओं के कारणों की खोज करते हैं तथा उनको दूर करके उन समस्याओं के समाधान के उपायों (Measures) का समुझाव देते हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि समाज मनोविज्ञान वास्तव में एक व्यवहारपरक विज्ञान (Applied Science) है।

12.3 व्यवहारपरक समाज विज्ञान के तर्क आधार (Relationales of Applied Science)

प्रयुक्त समाज विज्ञान के दो मुख्य तर्क आधार हैं-

(i) सामाजिक संघटक (Social components),

(ii) मानव सम्बन्ध (Human relationship)।

(i) सामाजिक संघटक (Social Components) - सामाजिक व्यावहारिक समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है कि उसमें निहित सामाजिक संघटक को निर्धारित किया जाए। एक व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में समाज मनोविज्ञान इसी तर्क आधार के आलोक में व्यावहारिक समस्या का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करता है। इस प्रयास में उसे जिस हद तक सफलता मिल पाती है, उसी हद तक वह समस्या हल हा पाती है। जैसे- जातिगत दंगे, सांप्रदायिक दंगे या दहेज प्रथा के समुचित समाधान के लिए इसमें निहित सामाजिक संघटकों या तत्वों का आकलन अति आवश्यक है। इसी तर्क आधार के आलोक में समाज मनोविज्ञान का महत्व एक व्यावहारिक या व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में बढ़ता जा रहा है।

(ii) मानव सम्बन्ध (Human Relationship) - व्यवहारपरक समाज मनोविज्ञान का दूसरा तर्क आधार (rationale) मानव सम्बन्ध है। तर्क आधार यह है कि व्यवहारपरक सामाजिक समस्याओं का समाधान मानवीय मूल्यों के आलोक में किया जाना चाहिए। प्रत्येक सामाजिक समस्या के पीछे मानवीय मूल्यों की प्रधानता होती है। भारतीय प्रसंग में साम्प्रदायकि दंगे, जातिगत दंगे, आतंकवाद आदि समस्याओं का समाधान इसलिए आवश्यक है कि इससे

मानवीय सम्बन्धों अथवा मानवीय मूल्यों की सुरक्षा होती है। इसी प्रकार किसी व्यावहारिक सामाजिक समस्या के समाधान के पीछे मानव कल्याण निहित होता है। इसी तर्क आधार के मदेनजर समाज मनोविज्ञान का महत्व एक व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में और बढ़ता जा रहा है। इस संदर्भ में किए गए अध्ययनों से उपर्युक्त बातों की पुष्टि होती है (Rubin, 1998, Katz, 1969)। इस प्रकार यह स्पस्ट होता है कि समाज मनोविज्ञान आवश्यक रूप से व्यवहारपरक मनोविज्ञान भी है। इस अर्थ में यह शिक्षा मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान आदि व्यावहारिक मनोविज्ञान से अभिन्न तथा सामान्य, बाल मनोविज्ञान आदि शुद्व मनोविज्ञानों से भिन्न है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि समाज मनोविज्ञान का स्वरूप मनोविज्ञान की दूसरी शाखाओं से भिन्न है। मनोविज्ञान की अन्य शाखाएं या तो शुद्व मनोविज्ञान की श्रेणी में आती हैं या व्यवहारपरक मनोविज्ञान की श्रेणी में आता है। या इसका अपूर्व स्वरूप है, जो इसे अन्य शाखाओं से भिन्न बना देता है।

उपर्युक्त दोनों मूलाधारों के सन्दर्भ में समा मनोविज्ञान एक प्रयुक्त विज्ञान के रूप में विकसित हो रहा है और साममाजिक समस्याओं को समझने तथा उसका समुचित समाधान खोजने में प्रयत्नशील है। अपने इस प्रयत्न में समाज मनोवैज्ञानिक मानवीय मूल्यों पर अधिक बल डाल रहे हैं। प्रयुक्त समाज मनोवैज्ञानिक यह मानकर चलते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में आलोचनात्मक तर्कणा की क्षमता एवं वैज्ञानिक बुद्वि की क्षमता होती है जो उन्हें सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायता करते हैं तथा नैतिक मूल्यों के विकास में मदद करते हैं। सामाजिक समस्याओं के समाधान में इन मानवीय मूल्यों पर बल डालनेवाले मनोवैज्ञानिकों में कर्ज (Kurtz, 1968, 1971) जॉनसन (Johnson, 1973), केलमन (Kelman, 1969) तथा स्मिथ इत्यादि प्रधान हैं। इन लोगों ने एकमत होकर जोर डाला है कि समाज मनोविज्ञान का दृष्टिकोण मानवीय एवं वैज्ञानिक दोनों ही होना चाहिए ताकि समाज मनोवैज्ञानिक प्राप्त विवेकपूर्ण विधियों का प्रयोगकर सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में पूर्णत: सफल हो सके।

समाज मनोविज्ञान को एक प्रयुक्त विज्ञान के रूप में शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त होने के लिए यह आवश्यक है कि उसके तीन पहलुओं अर्थात् सिद्वान्त (Theory), शोध (Research) एवं अभ्यास (Practice) में अभूतपूर्व तालमेल है। इन तीनों पहलुओं का स्वरूप कुछ ऐसा है कि वे एक दूसरे को पुनर्बलित करते हैं और समाज मनोवैज्ञानिक का हाथ मजबूत करते हैं, परन्तु यह अपने आप नहीं हो जाता है। इसके लिए समाज मनोवैज्ञानिक को इन तीनो पहियों को सही पथ पर रखना होगा।

समाज मनोविज्ञान के दोनों पक्षों-शुद्व तथा व्यावहारिक पक्ष के बीच गहरा सम्बन्ध है। शुद्व समाज मनोविज्ञान सैद्वान्ति तथा अमूर्त है। अतः इसके आधार पर प्राप्त परिणामों को सार्थकता तब तक प्रमाणित हो सकती, जब तक इन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जाए। शुद्व मनोविज्ञान के द्वारा कच्चा माल तैयार किया जाता है और व्यावहारिक समाज मनोविज्ञान के लिए शुद्व समाज मनोविज्ञान आवश्यक है। व्यावहारिक समाज मनोवैज्ञानिक समाज की व्यावहारिक समस्याओं का समाान उन सिद्वान्तों के आलोक में करते हैं, जिनका निर्माण शुद्व समाज मनोविज्ञान करते हैं। अतः यदि अनुकूल सिद्वान्त एवं नियम ही अनुकूल न हों तो व्यावहारिक समाज-मनोवैज्ञानिकों के कार्य आगे नहीं बढ़ सकते हैं। इसीलिए क्रेच आदि (Krech et al, 1962, 1982) ने कहा है कि - ''व्यावहारिक समाज मनोवैज्ञानिक को न सिर्फ व्यावहारिक समस्या के विषय में निपुण होना चाहिए बल्कि शुद्व समाज मनोविज्ञान में भी पूर्ण रूप से सुविज्ञ होना चाहिए''।

("The applied social psychologist not only must be expert on the details of the Practical problem but must thoroughly grounded in pure social psychology."।

12.4 सारांश (Summin-up)

समाज मनोविज्ञान जहां एक तरफ शुद्व मनोविज्ञान है, वहीं दूसरी तरफ यह व्यावहारिक मनोविज्ञान है। समाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा है। प्रयुक्त विज्ञान (Applied Science) उसे कहते हैं जिसमें व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। प्रयुक्त विज्ञान के द्वारा कई विभिन्न सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। जैसे- गरीबी, बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या, अन्तर समूह संघर्ष, अपराध, समाज में अर्थ के असमान वितरण से उत्पन्न समस्या, पूर्वाग्रह तथा विभेद, सम्बन्ध विच्छेद, आक्रामकता, वेश्यावृति आदि। मर्टन तथा निस्वेट (1961) के अनुसार समाज मनोविज्ञान का एक दायित्व व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करना है।

A. सामाजिक संघटक (Social Component), B. मानव सम्बन्ध (Human Relationship)।

12.5 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. सामाजिक मनोविज्ञान की विवेचना व्यवहारपरक विज्ञान के रूप में करें।
   Discuss Social Psychology as applied science.

2. अनुप्रयुक्त विज्ञान के रूप में सामाजिक मनोविज्ञान की विवेचना करें।
   Discuss the social pshychology as a field of applied science.